2 सितम्बर 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन

पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जी-जागरण
पर
प्रतिदिन प्रात:
6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 11 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

सितम्बर (प्रथम), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

शिविर सानन्द संपन्न

चैतन्यधाम-गांधीनगर (गुज.) : यहाँ दिनांक 24 से 28 अगस्त तक विशेष शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात:काल गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा क्रमबद्धपर्याय एवं दोपहर व सायंकाल तीनलोक विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही प्रतिदिन दोनों समय पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार के पुण्य-पाप अधिकार पर एवं पण्डित नीलेशभाई मुम्बई द्वारा प्रतिदिन दोनों समय समयसार के मोक्ष अधिकार की प्रारंभिक गाथाओं व गति-आगति विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन दोपहर में निमित्त-उपादान की कक्षा पण्डित सचिनजी शास्त्री द्वारा ली गई। आपके द्वारा ही प्रतिदिन नित्यनियम पूजन एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति करवाई गई। इसके अतिरिक्त पण्डित जयेशजी शास्त्री चैतन्यधाम व पण्डित चेतनजी शास्त्री चैतन्यधाम का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर का आयोजन शाह इंदिराबेन रमेशचन्द नाथालाल परिवार (वासणा) मुम्बई द्वारा किया गया।

शिविर में मुम्बई से पधारे 100 लोगों के अतिरिक्त गुजरात, मध्यप्रदेश व राजस्थान से लगभग 1100 लोगों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

वीडियो कॉन्फ्रेसिंग से वाशिंगटन में प्रवचन

दसलक्षण पर्व के अवसर पर विदुषी स्वानुभूति जैन, मुम्बई द्वारा प्रतिदिन मुम्बई से ही वाशिंगटन डी.सी. स्थित मुमुक्षुओं के लिये प्रतिदिन वीडियो कॉन्फ्रेंसिग से प्रोजेक्टर के माध्यम से लाईव इन्टरेक्टिव प्रवचन किये जायेंगे।

विशेष जानकारी के लिये सम्पर्क करें -

pavanzaveri@yahoo.com

इसी प्रकार विदुषी अल्पना भारिल्ल द्वारा भी यू.एस.ए., कनाडा, व इण्डिया के लिए इन्टरेक्टिव प्रवचन किये जायेंगे।

अष्टम गोष्ठी सानंद संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन् की प्रेरणा से मुमुक्षु मण्डल ग्रेटर ग्वालियर के तत्त्वावधान में ग्वालियर के अलग-अगल जिनमंदिरों के दर्शन-पूजन का कार्यक्रम प्रतिमाह आयोजित किया जाता है। इसी क्रम में इस बार अगस्त माह में परमागम मंदिर मुरार में दिनांक 18 अगस्त को **'क्रमबद्धपर्याय का जीवन में महत्व'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित प्रकाशचंदजी झांझरी उज्जैन ने की।

इस अवसर पर पण्डित अजीतजी अचल, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री मौ, प्रो. विनोदकुमारजी मुरार, श्रीमती मंजु जैन, श्रीमती मनीषा जैन, पण्डित अजीतजी जैन गोरमी वाले, अचिन्त्य जैन आदि वक्ताओं ने विषय पर प्रकाश डाला।

गोष्ठी का मंगलाचरण कु. सांची जैन, कु. प्राची जैन एवं कु. तान्या जैन ने किया।

इस अवसर पर रत्नत्रय मण्डल विधान भी आयोजित किया गया।

विधि विधान के कार्य पण्डित अनुभवप्रकाशजी जैन ग्वालियर एवं सुनीलजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये। **- सुनील शास्त्री, मुरार**

अपूर्व अवसर !! **अवश्य देखें !!**

दशलक्षण महापर्व के मंगल अवसर पर

जी-जागरण पर

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के

दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचनों का प्रसारण देखना न भूलें।

दिनांक 9 सितम्बर से प्रतिदिन

समय : प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

नोट : इन प्रवचनों को आप अपने मण्डल/मन्दिर में प्रोजेक्टर के द्वारा बड़े पर्दे पर भी दिखा सकते हैं।

सम्पादकीय -

धन्य है वह नारी

- सिद्धान्तसूरि पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

जब तक लकवे की गंभीर स्थिति में जीवराज नेत्र बंद करके समाधिस्थ होकर आत्मा-परमात्मा के स्वरूप का स्मरण करता रहा, वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त के सहारे राग-द्वेष से ऊपर उठने का उग्र पुरुषार्थ करता रहा, एवं स्वरूप का स्रमण करते-करते वह कभी-कभी अर्द्ध मूर्च्छा को भी प्राप्त होता रहा, तबतक समतारानी उनके जीवन से निराश होकर आंसुओं को पीते हुए अपने धैर्य का परिचय देती रही। उसने अपने मुख मण्डल पर उदासी की एक रेखा भी नहीं आने दी।

यद्यपि वह जीवराज के चिरवियोग की कल्पना मात्र से अन्दर से पूरी तरह टूट चुकी थी; किन्तु वह जीवराज के जीवन को समाधि की साधना में सफल करना चाहती थी। अतः वह उसकी मरणासन्न विषम परिस्थिति में भी अपनी मनःस्थिति पर दृढ़ता से काबू किए रही और जोर-जोर से संसार-शरीर और भोगों से वैराग्योत्पादक भावनायें स्वयं भाती रही और पतिदेव को सुनाती रही।

संयोग क्षणभंगुर सभी पर आत्मा ध्रुवधाम है।
पर्याय लयधर्मा, परन्तु द्रव्य शाश्वत धाम है।।
इस सत्य को पहचानना ही धर्म का आधार है।
ध्रुवधाम की आराधना आराधना का सार है।।

x x x

निज आत्मा निश्चय शरण व्यवहार से परमात्मा।
जो खोजता पर की शरण वह आत्मा बहिरात्मा।।
ध्रुवधाम से जो विमुख वह पर्याय ही संसार है।
ध्रुवधाम की आराधना आराधना का सार है।।

x x x

जिस देह में आतम रहे वह देह भी जब भिन्न है।
तब क्या करें उसकी कथा जो क्षेत्र से भी अन्य है।।
हैं भिन्न परिजन भिन्न पुरजन भिन्न ही ध्रुवधाम है।
हैं भिन्न भगनी भिन्न जननी भिन्न ही प्रियवाम है।।

x x x

अनुज-अग्रज सुत-सुता प्रिय सुहृद जब सब भिन्न हैं।
ये शुभ-अशुभ संयोगजा चिद्वृत्तियाँ भी अन्य है।।
स्वोन्मुख चिद्वृत्तियाँ भी आत्मा से अन्य है।
चैतन्यमय ध्रुव आत्मा गुणभेद से भी भिन्न है।।

इन भावनाओं को शान्त चित्त से सुनते-सुनते जीवराज की मूर्च्छा टूट गई, नेत्र खोल कर उसने देखा समता गंभीर मुद्रा में उदास बैठी वैराग्य भावना पढ़ रही है, वह मुस्कुराया, उसे मुस्कराते देख समता का मुखकमल भी खिल गया।

''सभी संयोग क्षणभंगुर हैं, पर्यायें लयधर्मा हैं, परिजन-पुरजन, जननी-भगनी, सुत-सुता, ध्रुव-धाम और प्रियवाम - सब भिन्न हैं, अशरण हैं; एकमात्र शुद्धात्मा और परमात्मा ही शरणभूत हैं।'' ये सभी बातें जीवराज ने कान लगाकर सुनी थी, इससे उसका वैराग्य और अधिक दृढ़ हो गया और उसने शेष जीवन संयम और साधना के साथ जीने का संकल्प ले लिया। अभी वह पूरी तरह स्वस्थ तो नहीं हो पाया, पर अपनी दिनचर्या किसी तरह समता के सहारे से कर लेता है और प्रवचनों के टेप, सी.डी. सुनकर अपना जीवन सार्थक कर रहा है।

समता को अत्यन्त उदास और दुःखी देखकर जीवराज को देखने आनेवालों में से एक ने कहा - ''दूसरों को दुःखी न होने की सलाह देनेवाली समता स्वयं कैसी दुःखी हो रही है? क्या ये उपदेश मात्र दूसरों के लिए ही होते हैं?''

दूसरे साथी ने समाधान किया - ''अरे भाई! बिना जाने-समझे और बिना सोचे-विचारे तुम्हें किसी की ऐसी आलोचना नहीं करना चाहिए। ज्ञानी की भूमिका क्या/कैसी होती है, इसका तो तुम्हें कुछ पता है नहीं और ऐसे अवसर पर भी जो मुँह में आया कह दिया। जो सुनेगा वह तुम्हें ही मूरख कहेगा। **किसी भी बात को कहने के पहले उसकी प्रतिक्रिया दूसरों पर क्या होगी, इस बात का विचार अवश्य करना चाहिए। खैर ....''**

सुनो! कोई कितना भी ज्ञानी क्यों न हो, ऐसी जानलेवा बीमारी की प्रतिकूल परिस्थितियों में तो धैर्य का बाँध टूट ही जाता है। वह साधु-सन्यासिन तो है नहीं; ज्ञानी ही तो है। जीवनभर का रागात्मक संबंध भला पलभर में विराग में कैसे बदल जायेगा। अभी तुम ऐसा क्यों बोलते हो? धीरे-धीरे देखना होता है क्या?

दूसरों को समझाना, ढांढस बंधाना अलग बात है और स्वयं का ऐसी खतरनाक बीमारी की विषम परिस्थिति में सहज रह पाना बात ही कुछ और है। रोगी की वेदना की कल्पना से ही रोना आ जाता है।

समतारानी का रोना कोई अनहोनी बात नहीं है, उसकी भूमिका में वह बिल्कुल स्वाभाविक है। फिर भी उसकी हिम्मत की दाद तो देनी ही पड़ेगी।

धन्य है उस नारी को, जिसने जीवराज को प्रत्येक भली-बुरी परिस्थिति में फूलों जैसा सहेजा, संभाला और उसकी सेवा-सुशुश्रा से ही वह निराकुलता से आत्मा-परमात्मा की आराधना करते हुए अपने जीवन को सफल कर रही है।

जीवराज को इस दुःखद अवस्था में ढांढ़स बंधाने आनेवालों में एक व्यक्ति ने दूसरे के कान में जो कमेन्ट्स किया, वह बात कानों-कान

समतारानी तक पहुँच ही गई। इसलिए तो कहा है - **''चतुकर्णे भिद्यतेवार्ता द्विकर्णे स्थिरी भवेत्'' कोई बात चार कानों में पहुँची नहीं कि जग जाहिर हो जाती है। अतः किसी से कुछ कहने के पहले बात को विवेक की तराजू पर तौलना चाहिए।**

समता अत्यन्त सज्जन, सुशील और विवेकी तो है ही। उसने आगंतुक द्वारा किए उस कमेन्ट्स को अन्यथा अर्थ में नहीं लिया। बल्कि उससे यह नया सबक सीखा कि - **''जो दूसरों से शिक्षारूप में कहा जाय, उस पर स्वयं भी अमल करना चाहिए। किसी को कहकर नहीं सिखाया जा सकता, करके ही सिखाया जा सकता है। अन्यथा कही गई बात अप्रभावी ही रहेगी।''** यह सोचकर उसने तत्काल ही स्वयं को संभाला और सहज हो गई और सुबह-शाम को प्रतिदिन एक-एक घंटे जीवराज के पलंग के पास बैठकर सामूहिक स्वाध्याय करने की व्यवस्था भी की, ताकि तत्वाभ्यास के वातावरण से उसका उपयोग बदला रहे और उसे रोगजनित पीड़ा का अनुभव कम से कम हो। उसकी योजना सफल हुई और दुःख का वातावरण एकदम सहज हो गया।

जीवराज के बीमार होने से समतारानी को दुःख तो होता है, पर पुण्य-पाप के फल का विचार कर वह स्वयं शांत रहती है और जीवराज को सहनशील बनने में निमित्त बनती है। उसने अपने समता नाम को सार्थक करते हुए अन्य साधारण नारियों की तुलना में स्वयं को बहुत कुछ संभाल लिया। वह आर्तध्यान के दुष्परिणाम से तो सुपरिचित है ही, तत्वज्ञान के अभ्यास से उसकी परद्रव्य में इष्टानिष्ट की मिथ्याकल्पना भी क्षीण हो गई।

वह जानती है कि ''संयोग न सुखदायक है और न दुःखदायक है; और संयोगीभाव निश्चित ही दुःखदायक हैं। अत: जैसी/जो स्थिति है, उसी में सहज प्रयास करना चाहिए। कामना तो यह है कि वे निरोग हो जाँय; परन्तु यह किसी के हाथ की बात नहीं है, अत: हमसे उनकी जितनी अनुकूलता रखी जा सके वैसा उपाय करके उनकी सेवा में सावधानी वर्तना है।''

यह सोचते-विचारते समतारानी का पति एवं पुत्र-पुत्री के प्रति राग वैराग्य में बदल गया। उसने साम्यभाव से जीवन जीने का निश्चय कर लिया। अब वह अपना सर्वाधिक समय भी जीवराज की सेवा-सुश्रुषा के साथ-साथ ध्यान और अध्ययन-चिन्तन मनन में ही बिताने लगी।

लकवा की बीमारी में व्यक्ति अधमरा-सा हो जाता है, हाथ-पैर काम नहीं करते, हिलना-डुलना भी मुश्किल होता है; बोलने में उच्चारण सही नहीं होता। यह लम्बे समय तक चलनेवाली बीमारी है। ऐसी हालत में अच्छों-अच्छों का धैर्य टूट जाता है, रोगी की उपेक्षा होने लगती है; पर समता उन नारियों में नहीं है, वह पति के लिए पूर्ण समर्पित है, उन्हें एक क्षण सूना नहीं छोड़ती, उसके इशारे पर दौड़-दौड़ कर काम करती है। धन्य है वह नारी जो दूसरों के दुःख में इसतरह साथ दे रही है।

जीवराज ने समतारानी से कहा कि ''समता ! यदि सम्यग्दर्शन मोक्ष महल की प्रथम सीढ़ी है तो मैं दावे से यह कह सकता हूँ कि **''वस्तु स्वातंत्र्य का सिद्धान्त उस मोक्ष महल की नींव का मजबूत पत्थर है।** जिस तरह गहरी जड़ों के बिना वटवृक्ष सहस्रों वर्षों तक खड़ा नहीं रह सकता, गहरी नीव के पत्थरों के ठोस आधार बिना बहु-मंजिला महल खड़ा नहीं हो सकता; उसी प्रकार **वस्तु स्वातंत्र्य एवं उसके पोषक चार अभाव, पाँच समवाय, षटकारक, परपदार्थों का अकतृत्व का सिद्धान्त, कारण-कार्य आदि की ठोस नींव के बिना मोक्ष महल खड़ा नहीं हो सकेगा।** अतः इन सिद्धान्तों का सर्वाधिक प्रचार-प्रसार एवं परिचय होना ही चाहिए।''

जीवराज ने इसे क्रियान्वय करने की योजना भी बनाई थी, परन्तु अनायास ही वे लकवा से पीड़ित हो जाने के कारण इस काम को नहीं कर सके। समता ने संकल्प किया कि - ''पतिदेव की कामना को मैं पूरा करूँगी। समतारानी ने यदि ठान लिया तो वह करके ही दिखायेगी; क्योंकि आज तक उसने जो ठाना वह करके ही दिखाया। उसका कोई काम अधूरा नहीं रहा।

नारियों के विषय में मेरी (लेखक) यह दृढ़ अवधारणा है कि यदि नारी कोई क्रान्तिकारी कदम उठाती है तो निःसंदेह उसमें पुरुषों की तुलना में कई गुनी अधिक क्षमता होती है। अन्यथा वह कोई क्रान्तिकारी कदम उठा ही नहीं सकती।

लेकिन नारियों के बारे में दिनकर कवि ने कहा है -

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।।''

उनकी शारीरिक और मानसिक रचना ही प्रकृतिप्रदत्त कुछ ऐसी है कि वे पुरुषों की तुलना में वस्तुतः अबला हैं। एक तो मातृत्व के कारण वे करुणा और प्रेम की मूर्ति हैं और भावुकता के कारण बात-बात में आँसू आ जाते हैं। अपनी शील सुरक्षा की चिंता भी उन्हें सदैव बनी ही रहती है। इन सब कारणों से संरक्षकों द्वारा ही बाल्यावस्था से ही उनकी कोमल कली को मरोड़ सा दिया जाता है।

गुप्तजी द्वारा भी नारियों की दयनीय दशा को दर्शाते हुए कहा है -

नरकृत शास्त्रों के सब बन्धन हैं नारी को ही लेकर।
अपने लिए सभी सुविधायें, पहले ही कर बैठे नर।।

तात्पर्य यह है कि साधारण नारी अपनी मान-मर्यादाओं में; सामाजिक रूढ़ियों और धार्मिक अंधविश्वासों में ऐसी जकड़ी, सिमटी रहती है कि वे सक्षम होकर भी अपनी क्षमता (योग्यता) को व्यक्त नहीं कर पातीं। उन्हें अपनी क्षमता व्यक्त करने के अवसर ही नहीं मिल पाते, इस कारण अधिकतर नारियों की क्षमता तो कुंठित ही हो जाती है।

विरली नारियाँ ही ऐसा साहस कर पाती हैं कि वे सामाजिक पुरातन पन्थी रूढ़ियों और धार्मिक अंध विश्वासों से ऊपर उठकर आगे आये।

समतारानी उन विरली साहसी नारियों में अग्रगण्य है, इसकारण उसने धार्मिक क्षेत्र में वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त को जन-जन का विषय बनाने की बात ठान ली है। हम कामना करते हैं कि वह अपने संकल्प में सफल हो। ●

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 9 सितम्बर 2013 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 12 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 29 अगस्त 2013 तक हमारे पास 525 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 29 अगस्त 2013 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 490 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है ह्न

विशिष्ट विद्वान : 1. कोटा : बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, **2. जयपुर** : पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, जयपुर, **3. औरंगाबाद** : ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर, **4. सोनागिर** : पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन, विदिशा, **5. बेलगाँव** : ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन, खनियांधाना **6. ग्वालियर (फाल्के बाजार)** : पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी, उज्जैन, **7. जबलपुर** : ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद, **8. बडोदा** : ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री, खनियांधाना, **9. वस्त्रापुर (अहमदाबाद)** : पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, जबलपुर, **10. दिल्ली (विश्वासनगर)** : पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, **11. निसईजी** : ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल', **12. नागपुर** : ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, **13. बीना** : पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर, **14. दिल्ली** : पण्डित प्रदीपजी झांझरी, उज्जैन, **15. नवरंगपुरा–अहमदाबाद** : पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन, आगरा, **16. दादर मंदिर–मुम्बई** : पण्डित शैलेशभाई शाह, तलौद, **17. मलाड (ईस्ट)** : पण्डित राकेशजी शास्त्री, नागपुर, **18. अलीगढ़ (मंगलायतन)** : पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, मंगलायतन, **19. मुम्बई** : पण्डित दिनेशभाई शाह, **20. मुम्बई** : वि. उज्ज्वला शाह, **21. राजकोट** : पण्डित सुनील जैनापुरे, राजकोट **22. फिरोजाबाद** : पण्डित पीयूष कुमार शास्त्री, जयपुर, **23. दादर–मुम्बई** : पण्डित अनिलकुमार शास्त्री, भिण्ड, **24. शिवपुरी** : ब्र. कैलाशचन्द्रजी अचल, **25. गजपंथा** : डॉ. दीपक जैन, जयपुर।

विदेश : 1. टोरंटो : डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी, **2. शिकागो** : पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर, **3. नैरोबी केन्या** : पण्डित ज्ञायक शास्त्री, मुम्बई।

मध्यप्रदेश प्रान्त

1. अशोकनगर : पण्डित चेतनभाई, राजकोट, **2–3. जबलपुर** : ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, दिल्ली, पं. बाबूभाई मेहता, फतेपुर, **4. इन्दौर (साधनानगर)** : पण्डितदेवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, **5. भोपाल (कोहेफिजा)** : पण्डित सुनीलकुमारजी इंजी. सागर, **6. बीना** : पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर, **7. रतलाम (आदिनाथ चैत्यालय)** : पण्डित रीतेशजी शास्त्री, सनावद, **8. इन्दौर (शक्कर बाजार)** : पण्डित सुरेशचन्दजी, टीकमगढ़ **9. विदिशा (किला अन्दर)** : पण्डित प्रतीकजी शास्त्री जबलपुर, **10. बड़नगर** : पण्डित संजयजी पुजारी, खनियाँधाना, **11. इन्दौर (पलासिया)** : पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक, पिड़ावा, **12. उज्जैन** : पण्डित मनोजकुमारजी, जबलपुर, **13. गुना (वीतराग–विज्ञान)** : पण्डित अरुणकुमारजी मोदी, सागर, **14. भोपाल (चौक)** : ब्र. सुनीलजी शास्त्री, शिवपुरी, **15. भिण्ड (परमागम मन्दिर)** : पण्डित चेतन शास्त्री, कोटा, **16. बदरवास** : पण्डित राजेशकुमारजी जैन, जबलपुर, **17–18. ग्वालियर (फालका बाजार)** : पण्डित विमलचन्दजी झांझरी, ब्र. समता झांझरी उज्जैन, **19. गढ़ाकोटा** : पण्डित नागेशजी, पिड़ावा **20. सागर (महावीर जिनालय)** : पण्डित प्रकाशचन्दजी झांझरी उज्जैन, **21. कोलारस (चौधरी मोहल्ला)** : पण्डित महेशचन्दजी, ग्वालियर, **22. ग्वालियर (सोडा का कुआँ)** : पण्डित शिखरचन्दजी, विदिशा, **23. बेगमगंज** : पण्डित मुरारीलालजी, नरवर, **24. खुरई** : पण्डित नरेन्द्रकुमारजी, जबलपुर, **25. होशंगाबाद** : पण्डित आकेशजी, छिन्दवाड़ा, **26. खनियांधाना** ब्र. कल्पनाबेन, जयपुर **27. जावरा** : पण्डित प्रमोदजी मकरोनिया, सागर, **28. बण्डा** : पण्डित संभव शास्त्री, नैनधरा, **29. इन्दौर (ओम विहार)** : पण्डित मनीष शास्त्री, खतौली, **30. अम्बाह** : पण्डित अंकित शास्त्री, छिन्दवाड़ा, **31. भोपाल (कस्तूरबानगर)** : डॉ. महेशचन्दजी शास्त्री, गुढ़ा, **32. करेरा** : पण्डित चिराग शास्त्री, बांसवाड़ा, जयपुर, **32. मौ** : पण्डित निखिल शास्त्री, मेरठ, **33. शहडोल** : पण्डित ब्र. रजतकांत शास्त्री, खनियाँधाना, **33. छिन्दवाड़ा** : पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी, मुजफ्फनगर, **34. शाहगढ़** : पण्डित निर्मलकुमारजी एडवोकेट, **35. सागर (तारण–तरण)** : पण्डित श्री तेजकुमारजी गंगवाल, इन्दौर, **36. शिवपुरी (शान्तिनाथ मन्दिर)** : पण्डित अभिषेक शास्त्री, हीरापुर, जयपुर, **37. शिवपुरी (परमागम मन्दिर)** : पण्डित कैलाशचन्दजी अचल, ललितपुर, **38. इन्दौर (गांधीनगर)** : पण्डित कस्तूरचन्दजी बजाज, भोपाल, **39. मन्दसौर (गोल चौराहा)** : पण्डित नेमीचन्दजी, ग्वालियर, **39. मगरौन** : पण्डित अर्पित शास्त्री, बांसवाड़ा, **40. गंजबसौदा (तारण–तरण)** : विदुषी ब्र. सुधाबेन, छिन्दवाड़ा, **41. बनखेड़ी** : पण्डित शुभम् शास्त्री, उभेगाँव, **42. शुजालपुर मण्डी** : पण्डित आशु शास्त्री, जयपुर, **43. शहापुर (बुरहानपुर)** : आशीष शास्त्री, (भिण्ड) जयपुर, **44. गौरझामर** : ब्र. धरणेन्द्रजी, दिल्ली, **45. बीड़** : पण्डित सुमित शास्त्री, खरेह, जयपुर, **46. नरवर** : पण्डित नीलेश शास्त्री, बांसवाड़ा, **47. रांझी (जबलपुर)** : पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल, इन्दौर **48. कुचड़ौद** : पण्डित विक्रांत मोदी, शास्त्री, भगवां, **49. आरोन** : पण्डित श्री जगदीशजी पवार, उज्जैन, **50. निसईजी (मल्हारगढ़)** : ब्र. केशरीचन्दजी धवल, छिन्दवाड़ा, **51. मकरोनिया (सागर)** : पण्डित नन्दकिशोरजी गोयल, विदिशा, **52. शहपुरा भिटोनी** : पण्डित अंकित शास्त्री, धार, **53. सिवनी** : पण्डित अखिलजी इंजी, इन्दौर, **54. महिदपुर** : पण्डित संजय साव शास्त्री, खनियांधाना, **55. कोलारस (आदिनाथ)** : पण्डित प्रशांत शास्त्री, अमरमऊ, जयपुर, **56. धर्मपुरी** : पण्डित धनेन्द्रजी सिंहल, ग्वालियर, **56. अमायन** : पण्डित सचिन शास्त्री, सागर, **57. इन्दौर (विजयनगर)** : पण्डित कमलेशजी शास्त्री, मौ., **58. दलपतपुर** : पण्डित सुदीपजी शास्त्री, बरगी, **59. रहली** : पण्डित प्रीतिंकर शास्त्री, ललितपुर (जयपुर), **60. ग्वालियर (थाठीपुर)** : पण्डित फूलचन्दजी, हिंगोली, **61. विदिशा (अरिहंतविहार)** : पण्डित अंकुर शास्त्री, देहगाँव, **62. कटनी** : पण्डित कमलचन्दजी, पिड़ावा, **63. फोपनार** : पण्डित भूपेन्द्र जैन, मंगलायतन, **64. राधौगढ** : पण्डित सुनीलजी जैन, देवरी, **65. पंधाना** : पण्डित सूरज शास्त्री, कुचामन सिटी, **66. पथरिया** : पण्डित पदमकुमारजी, कोटा, **67. निसईजी (मल्हारगढ़)** : पण्डित रतनलालजी, होशंगाबाद, **68. निसईजी (मल्हागढ़)** : पण्डित राजकुमारजी सर्राफ, सागर, **69. निसईजी** : विदुषी पुष्पाबेन, होशंगाबाद, **70. निसईजी** : पण्डित बाहुबली शास्त्री, जयपुर, **71. अथाईखेड़ा (अशोकनगर)** : पण्डित राहुल शास्त्री, जयपुर, **72. इन्दौर (रामचन्द्र नगर)** : पण्डित गौरव शास्त्री, चन्देरी, **73. करेली** : पण्डित ऋषभचन्द जैन, मंगलायतन, **74. बिजुरी** : पण्डित नियम शास्त्री, जयपुर, **74. घुवारा** : पण्डित शुभम् शास्त्री, सागर, **75. ग्वालियर (फाल्के बाजार)** : पण्डित अंकित शास्त्री, लूणदा, **76. इन्दौर (कालानी नगर)** : पण्डित पदमचन्दजी गंगवाल, इन्दौर, **77. गंधवानी (धार)** : पण्डित अक्षय शास्त्री, बाँसवाड़ा, **78. विजयपुर (गुना)** : पण्डित विमलचन्दजी, जलेसर, **79. अमलाई** : पण्डित समर्पण शास्त्री, भिण्ड, जयपुर,

80. द्रोणगिरी : पण्डित रमेशचन्दजी लवाणवाले, जयपुर, **81. सागर (बालकव्यू)** : पण्डित सन्मति शास्त्री, सागर, **82. जावर** : पण्डित पंकजजी शास्त्री, खडेरी, **83. विदिशा (स्टेशन मन्दिर)** : पण्डित सतीशजी पिपरई, **84. सनावद (समवशरण मन्दिर)** : पण्डित विवेकजी शास्त्री, पिड़ावा, **85. सागर (तारण-तरण)** : पण्डित अक्षय शास्त्री, छिन्दवाड़ा, जयपुर, **85. बदरवास** : पण्डित अभयकुमारजी जैन, **86. दलपतपुर** : पण्डित निखलेश शास्त्री, **87. खिरकिया जि. हरदा** : पण्डित हुकमचन्दजी राघौगढ़ **88. सुसनेर** : पण्डित अचल शास्त्री, खनियांधाना, **89. भानगढ़ (बीना)** : पण्डित सौरभ शास्त्री, कोलारस, जयपुर, **90. गंजबसौदा (त्रिमूर्ति मंदिर)** : पण्डित अभयजी शास्त्री, सुनवाहा, जयपुर, **91. इटारसी (तारण-तरण)** : पण्डित सुधीर सहयोगी, सागर, **92. गौरझामर** : पण्डित विनय शास्त्री, दिल्ली, **93. पचमढ़ी** : पण्डित प्रतीक शास्त्री, जयपुर, **94. इन्दौर (रामचन्द्र नगर)** : विदुषी अनुभूति शास्त्री, जयपुर, **95. शहपुरा भिटौनी** : पण्डित देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री, जयपुर, **सागर (मकरोनिया बालकक्षा हेतु)** : पण्डित ऋषभ जैन, बाँसवाड़ा, **96. बरायठा** : पण्डित निलय शास्त्री, जयपुर, **97. मन्दसौर (कालाखेत)** : विदुषी पुष्पाजी, खंडवा, **98. मौ (विधान हेतु)** : पण्डित अभयजी शास्त्री, ग्वालियर, **99. राघौगढ़** : पण्डित गौरवजी शास्त्री, कोलारस, **100. इन्दौर (गांधीनगर)** : पण्डित गौरवजी शास्त्री, भिण्ड, **101. नई सराय (अशोकनगर)** : पण्डित अमित शास्त्री, बाँसवाड़ा, **102. धार** : पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, जौलाना, **103. राघौगढ़** : पण्डित अशोकजी शास्त्री, कारंजा, **104. द्रोणगिरी** : पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री, खनियांधाना, **105. द्रोणगिरी** : पण्डित कैलाशचन्दजी, महरोनी, **106. करेली** : पण्डित प्रवेश भारिल्ल, **107. लुकवासा** : पण्डित देवेन्द्रजी शास्त्री, अकाझिरी, **108. सिंगोली** : पण्डित राजेशजी शास्त्री, **109. इन्दौर (लश्करी मन्दिर)** : पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री, बरा , **110. शुजालपुरसिटी** : पण्डित अमितेन्द्र शास्त्री, खनियांधाना, **111. धामनोद** : पण्डित नितिन शास्त्री, जयपुर, **112. टीकमगढ़** : पण्डित सुरेन्द्रजी पंकज, छिन्दवाड़ा, **113. भिण्ड (देवनगर)** : पण्डित सजल शास्त्री, सिंगाड़ी, **114. जबेरा** : ब्र. विमलाबेन, जयपुर, **115. अभाना** : पण्डित अखिलेश शास्त्री, जयपुर, **116. करेली** : पण्डित विकासजी, गौरझामर, **117. चान्दामेटा** : पण्डित सुमित शास्त्री, भिण्ड, **118. बावई** : पण्डित आयुष शास्त्री, बांसवाड़ा, **119. इन्दौर (संगमनगर)** : पण्डित अशोकजी शास्त्री, रायपुर, **120-121. सागर** : पण्डित शिखरचन्दजी, गुरसौरा, पण्डित अखिलेश शास्त्री, **122.बेरसिया** : पण्डित जीवनजी शास्त्री, घुवारा, **123-127. सोनागिरि** : पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा, डॉ. मुकेश जैन शास्त्री, विदिशा, पण्डित लालजी रामजी विदिशा, पण्डित विजयकुमारजी शास्त्री, **128-30. दमोह** : पण्डित मनोजजी शास्त्री, अभाना, पण्डित धन्यकुमारजी जैन, पण्डित प्रदीपजी शास्त्री, **131. मन्दसौर** : डॉ.नरेन्द्र शास्त्री, जयपुर, **132. पन्ना** : पण्डित नरेशकुमारजी शास्त्री, **133. इन्दौर** : पण्डित रविकुमारजी शास्त्री, विदिशा, **134. छिन्दवाड़ा** : पण्डित ऋषभजी शास्त्री, **135. कटनी** : पण्डित सन्तोष शास्त्री, दमोह, **136. नौगाँव** : पण्डित शीतलजी शास्त्री, गूडर, **137-38. मुरार (ग्वालियर)** : पण्डित सुनीलजी शास्त्री, पण्डित राहुलजी शास्त्री, दमोह, **139. घोडा डोंगरी** : पण्डित सुरेशचन्दजी शास्त्री।

महाराष्ट्र प्रान्त

1. मुम्बई (सीमंधर जिनालय) : पण्डित संजय शास्त्री, अलीगढ़, **2. मुम्बई (दादर मंदिर)** : पण्डित शैलेषभाई तलौद, **3. मुम्बई (दादर मंडल)** : पण्डित अनिलजी शास्त्री, भिण्ड, **4. मुम्बई (बोरीवली)** : पण्डित विपिनजी शास्त्री, मुम्बई, **5. मुम्बई (घाटकोपर)** : पण्डित सौरभ शास्त्री, शहपुरा, **6. मुम्बई (भायंदर) वेस्ट** : पण्डित श्रेणिकजी, जबलपुर, **7. मुम्बई (मलाड)** : पण्डित राकेशजी शास्त्री, नागपुर, **8. मुम्बई (दहीसर)** : पण्डित अभिषेक शास्त्री, गजपंथा, **9. नागपुर (इतवारी)** : ब्र. हेमचन्दजी 'हेम', देवलाली, **10. गजपंथा** : डॉ. दीपकजी शास्त्री, जयपुर, **11. पुणे (स्वा. मंडल)** : डॉ. कपूरचन्दजी कौशल, भोपाल, **12. पुणे (सांगवी)** : पण्डित नन्दकिशोरजी मांगूलकर, काटोल, **13. जलगांव** : पण्डित शीतलजी पाण्डे, उज्जैन, **14. हिंगाली** : पण्डित विराग शास्त्री, जबलपुर, **15. मलकापुर** : पण्डित सुबोधजी सिंघई, सिवनी, **16. वाशिम (जवाहर कालोनी)** : पण्डित चितरंजनजी, छिन्दवाड़ा, **17. कारंजा (लाड)** : पण्डित आशीष शास्त्री, कोटा, **18. सेनगाँव** : पण्डित अंकुर शास्त्री, मडदेवरा, **19. मुम्बई (एवरशाईनगर)** : पण्डित मनीषजी शास्त्री, इन्दौर, **20. देवलाली** : पण्डित जयकुमारजी जैन, बारा, **21. जयसिंगपुर** : पण्डित विजयसेन शास्त्री, आलते, **22. चिखली** : पण्डित अक्षय चव्हाण, ध्रुवधाम, **23. अकलूज** : पण्डित शुभम् शास्त्री, जयपुर, **24. औरंगाबाद** : पण्डित ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर, **25. पुणे (चिंचवड़)** : पण्डित संजयजी सेठी, जयपुर, **25. वरूड** : पण्डित रोहन घाटे शास्त्री, जयपुर, **26. डासाला** : पण्डित शीतलजी शास्त्री, कोल्हापुर, **27. रिसोड** : पण्डित स्वप्निल लंबू, बांसवाड़ा, **28. अक्कलकोट** : पण्डित संकेत बोरालकर शास्त्री, जयपुर, **29. फालेगाँव** : पण्डित रत्नेश जैन, बांसवाड़ा, **30. बेलोरा** : पण्डित रोहित सिदनाले, बांसवाड़ा, **औरंगाबाद** (छात्र विद्वान) : पण्डित अमोल महाजन, जयपुर, **31. नातेपुते** : पण्डित शीतल दोशी, सोलापुर, **32. विहीगाँव** : पण्डित वीतराग बसवाड़े, जयपुर, **33. गजपंथा (विधान हेतु)** : पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' भोपाल, **34. देऊलगाँवराजा** : पण्डित विनीत शास्त्री, आगरा, **35. देवलाली (विधान हेतु)** : पण्डित दीपकजी धवल, भोपाल, **36. अकोला** : पण्डित ऋषभजी शास्त्री, अहमदाबाद, **37. मुम्बई (अंधेरी)** : पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, कोटा, **38. बाहुबली (कुंभोज)** : डॉ. नेमीनाथ शास्त्री, दानोली, **40. सांगली** : पण्डित शाकुल शास्त्री, मेरठ, **41. वाशी (नवी मुम्बई)** : ब्र. नन्हे भैया, सागर, **41. कल्याण (मुम्बई)** : पण्डित अंकित जैन, इन्दौर, **42. पुणे** : पण्डित जितेन्द्र राठी, नागपुर, **43. गजपंथा (मराठी विद्वान)** : पण्डित गणेशजी शास्त्री, जयपुर, **44. चोपड़ा** : पण्डित अभिषेक मंगलार्थी, उभेगाँव, **45. मुम्बई (कांदीबली)** : पण्डित अंकित सरल, खनियांधाना, **46. मुम्बई (मलाड)** : पण्डित अभिनय शास्त्री, जबलपुर, **47. काटोल** : पण्डित अध्यात्म शास्त्री, नरवर, **48. वडोत तांगडा** : पण्डित बाहुबली चौगुले, बाँसवाड़ा, **49. सावदा** : पण्डित जयेश रोकडे, **50. हेरले** : पण्डित अनिलजी आलमान शास्त्री, **51. कोल्हापुर** : पण्डित जिनचन्द्रजी शास्त्री, हेरले, **52. इचलकरंजी** : पण्डित दीपकजी अथणे, ढवली, **53. कोल्हापुर (उचगांव)** : पण्डित महेशजी पाटील, हेरले, **54. पुणे** : पण्डित सनतजी शास्त्री, रुकडी, **55. जत** : पण्डित उमेशजी घोसरवाडे, जयसिंगपुर, **56. जयसिंगपुर** : पण्डित संतोषजी मिणचे, बोरगांव, **57. सातारा** : पण्डित मिलिंदजी शास्त्री, कबनूर, **58. कोरेगांव** : पण्डित दीपकजी शास्त्री, आलते, **59. हिंगोली (आदिनाथ मंदिर)** : पण्डित अमोलजी शास्त्री, कातनेश्वर, **60. हिंगोली** : पण्डित पंकजजी संघई, **61. बसमतनगर** : पण्डित संदेशजी शास्त्री, कलमनुरी, **62-64. मुम्बई** : पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी, डॉ. शुद्धात्मप्रभा, **65-66. सेलू** : पण्डित विवेकजी शास्त्री, दलपतपुर एवं पण्डित शुभम् शास्त्री, दिल्ली, **67. मालेगांव** : पण्डित अक्षयजी पाटील, बांसवाड़ा, **68. सदाशिवनगर** : पण्डित अभिनन्दन चव्हाण, बांसवाड़ा, **69. रामटेक** : पण्डित आशीषजी शास्त्री, सिलवानी, **70. बालचन्दनगर** : पण्डित शैलेषजी शास्त्री, जयपुर, **71. मुम्बई (बसई)** : पण्डित साकेतजी शास्त्री, जयपुर, **72. अकोला (कौलखेडा)** : पण्डित दिलीपजी महाजन, मालेगांव, **73. पुणे** : पण्डित जितेन्द्र राठी, पारशिवनी, **74. मुम्बई (विक्रोली)** : पण्डित प्रफुल्ल शास्त्री, शेडबाल, **75. मुम्बई (चेम्बूर)** : पण्डित सुमेरचन्दजी बेलोकर, डसाला, **76-77. सोलापुर** : पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री, कारंजा एवं प्रशान्तजी शास्त्री, **78-79. कारंजा (आश्रम)** : पण्डित आलोकजी शास्त्री, जालना एवं

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

जैन तिथि दर्पण

जैन तिथि दर्पण

(पृष्ठ 5 का शेष...)
पण्डित चिन्तामण शास्त्री, औरंगाबाद, **80-83. नागपुर (विद्यालय)** : पण्डित विपिनजी शास्त्री, श्योपुर, पण्डित मनीषजी सिद्धाना, पण्डित आदेश बोरालकर, पण्डित रवीन्द्र महाजन, **84-87. सांगली** : पण्डित महावीरजी पाटील, विदुषी स्वयंप्रभा, नितिनजी कोठेकर, प्रसन्नजी शेटे, **88-89. सेलू** : पण्डित अशोकजी वानरे, चारढाणा, अनन्तकुमारजी शास्त्री, शिरपुर, **90. मुम्बई (थाणे)** : पण्डित किशोरजी शास्त्री, औरंगाबाद, **91. परभणी** : पण्डित कीर्तिञ्जय शास्त्री, फालेगांव, **92. शिरडशहापुर** : पण्डित प्रशान्तजी शास्त्री, राजुरा, **93. जिन्तूर** : पण्डित प्रदीपजी महाजन, सेनगांव, **94. मुम्बई (लोअर परेल)** : पण्डित आदित्य शास्त्री, खुरई।

राजस्थान प्रान्त

1. कोटा : पण्डित बाबू जुगल किशोरजी 'युगल', **2. कोटा (रामपुरा)** : पण्डित अनुभवजी शास्त्री, **3. कोटा (इन्द्र विहार)** : डॉ. महावीर शास्त्री, (टोकर) उदयपुर, **4. अलवर (मु. मंडल)** : पण्डित विक्रांत शहा, शोलापुर, **5. पिडावा** : पण्डित मनोजकुमारजी शास्त्री, करेली, **6. अजमेर (वी.विज्ञान भवन)** : पण्डित सुदीपजी जैन, बीना, **7. उदयपुर (सेक्टर-11)** : पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी जैन, उज्जैन, **8. उदयपुर (नेमीनगर)** : पण्डित अभिलाष शास्त्री, कोटा, **9. उदयपुर (गायरीयावास)** : डॉ. नेमचन्द शास्त्री, खतौली, **10. बून्दी (मुमुक्षु मण्डल)** : पण्डित राजीवजी शास्त्री, थानागाजी, **11. भीलवाड़ा** : पण्डित सुनील शास्त्री, प्रतापगढ़, **12. कानोड** : पण्डित सन्दीप शास्त्री, शहपुरा, **13. किशनगढ़** : पण्डित सुमतिनाथ शास्त्री, जयपुर, **14. सेमारी** : पण्डित शुद्धात्म खरेह (कोटा), **15. कुरावड़** : पण्डित पवनकुमारजी शास्त्री, जयपुर, **16. प्रतापगढ़ (मुमुक्षु मंडल)** : पण्डित सुनीलजी शास्त्री, निम्बाहेड़ा, **17. कुशलगढ़ (तेरापंथी)** : पण्डित जीवेशकुमारजी शास्त्री, पिड़ावा, **18. बिजौलिया** : पण्डित पदमकुमारजी अजमेरा, इन्दौर, **19. पीसांगन** : पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, जयपुर, **20. देवली (आदिनाथ)** : पण्डित सौरभ शास्त्री, खनियांधाना, जयपुर, **21. देवली (चन्द्रप्रभ)** : पण्डित विनीत शास्त्री, पोहरी, जयपुर, **22. टोकर** : ब्र. रविजी, ललितपुर, **23. साकरोदा** : पण्डित शुभम् मोदी, जयपुर, **24. लाम्बाखोह** : पण्डित सौरभ जैन, सागर, **25. जयथल** : पण्डित विरेन्द्रजी शास्त्री, आमेर, **26. लकड़वास** : पण्डित हेमचन्द जैन, शाहगढ़, जयपुर, **27. बोहेडा** : पण्डित रत्नेश जैन, बांसवाड़ा, **28. झालरापाटन** : पण्डित सचिन शास्त्री, भिण्ड, **29. अजमेर (वैशालीनगर)** : पण्डित अश्विन शास्त्री, नौगामा, **30. अजमेर (विधान हेतु)** : पण्डित ऋषभ जैन, मौ, **31. चित्तौड़गढ़ (कुम्भानगर)** : पण्डित धर्मचन्दजी, जयथल, **32. वल्लभनगर** : पण्डित विकासजी शास्त्री, बडामलहरा, **33. डबोक** : पण्डित योगेशजी शास्त्री देवरी, **34. अलवर (विधान)** : पण्डित निखिल शास्त्री, बांसवाड़ा, **35. बेगू** : पण्डित आशु शास्त्री, झालरापाटन, **36. पीसांगन (विधान हेतु)** : पण्डित अनुभव शास्त्री, जयपुर, **37. कोटा (मुमुक्षु आश्रम)** : पण्डित सौरभ शास्त्री, गढ़ाकोटा, **38. केलवाड़ा** : पण्डित अभिषेक शास्त्री, केलवाड़ा, **39. झालावाड़** : पण्डित विक्रान्त पाटनी, झालरापाटन, **40. बांसवाड़ा** : पण्डित प्रवीणजी शास्त्री, रायपुर, **41. छापड़ा** : पण्डित माणकचन्दजी शास्त्री, बेरी, **42. पारसोली** : पण्डित चिन्मय शास्त्री, पिड़ावा, **43. बारा** : पण्डित सतीशजी, पिपरई, **44. अलीगढ़** : पण्डित मिश्रीलालजी केकड़ी, **45. भीलवाड़ा** : पण्डित अरविन्द शास्त्री, बंडा, **46. कोटा (छावनी)** : पण्डित शनि शास्त्री, खनियांधाना, **47. कोटा (छावनी)** : पण्डित प्रेमचन्दजी बजाज, कोटा, **48. उदयपुर (सेक्टर-14)** : पण्डित खेमचन्द शास्त्री, गुढ़ाकोटा, **49. गढ़ी** : पण्डित मंयक शास्त्री, बांसवाड़ा, **50. निवाई** : पण्डित शिखरचन्दजी शास्त्री, सागर, **51. चाकसू** : पण्डित विजयजी शास्त्री, **52. अलवर (नेमिनाथ मंदिर)** : पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री, फुटेरा, **53. अलवर** : पण्डित प्रेमचन्दजी शास्त्री, भौंती, **54-55. भिण्डर** : पण्डित कृष्णचन्द शास्त्री, भिण्ड एवं पण्डित गजेन्द्र शास्त्री, **56. उदयपुर (मुमुक्षु मण्डल)** : पण्डित विकास शास्त्री, खनियांधाना, **57. भीण्डर** : पण्डित राहुल शास्त्री, बदरवास, **58. बीकानेर** : पण्डित नीशू शास्त्री, जयपुर, **59. कूण** : पण्डित अरविन्द शास्त्री, ललितपुर, **60. तालेडा** : पण्डित शुभम् मोदी, जयपुर, **61. कुशलगढ़ (शांतिनाथ)** : पण्डित नरेशजी शास्त्री, जयपुर, **62-66. जयपुर (स्मारक भवन)** : पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, जयपुर, डॉ. अरुण शास्त्री, अलवर, पण्डित परेश शास्त्री, बांसवाड़ा, पण्डित राजेश शास्त्री, शाहगढ़, डॉ. नीतेश शास्त्री, डडूका, **67. जयपुर (आदर्शनगर)** : पण्डित सोनूजी शास्त्री, फिरोजाबाद, **68. जयपुर (राजस्थान जैनसभा)** : डॉ. भागचन्दजी शास्त्री, **69. जयपुर** : पण्डित मनीषजी कहान खड़ैरी, **70-72. दौसा** : पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री, भोगांव, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी, कोलारस, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, टीकमगढ़, **73. विराटनगर** : पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, भिण्ड, **74-77. उदयपुर** : पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित संदीप शास्त्री, बिनोता, पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, सिलवानी, **78. अलवर** : डॉ. श्रेयांसजी खुरई, **79. विराटनगर** : पण्डित सुरेशजी शास्त्री, गुना, **80. जोधपुर** : पण्डित राजकमलजी शास्त्री, परतापुर, **81. रावतभाटा** : पण्डित संजयजी शास्त्री, हरसौरा। **82-84. जयपुर** : पण्डित सुरेशचंदजी शास्त्री गुना, पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा।

उत्तरप्रदेश प्रान्त

1. फिरोजाबाद : पण्डित पीयूषजी शास्त्री, जयपुर, **2. अलीगढ़ (मंगलायतन)** : पण्डित सचिनजी जैन, खनियांधाना, **3. मैनपुरी** : पण्डित जगदीशजी, उज्जैन, **4. खतौली (चन्द्रप्रभ जिनालय)** : पण्डित लालारामजी साहू, अशोकनगर, **5-6. ललितपुर** : ब्र. पुष्पाबेन एवं ज्ञानधारा झांझरी, उज्जैन, **7. कुरावली** : पण्डित हर्षित शास्त्री, खनियांधाना, **8. मेरठ (तीरगरान)** : पण्डित राहुल जैन, रानीपुर, **9. गुरसराय** : पण्डित चन्दूलालजी, कुशलगढ़, **10. भौगाँव** : डॉ. चन्द्रेशजी, शिवपुरी, **11. जैतपुरकला** : पण्डित अमित शास्त्री, बांसवाड़ा, **12. कानपुर (किदवईनगर)** : पण्डित विकास शास्त्री, मौ., **13. शिकोहाबाद** : पण्डित धवल शास्त्री, डडूका, **14. धामपुर** : पण्डित प्रदीपजी शास्त्री, खतौली, **15. कायमगंज** : पण्डित मयंक शास्त्री, टीकमगढ़, **16. करहल** : ब्र. सुकमाल झांझरी, उज्जैन, **17-18. केराना** : पण्डित राहुल जैन, बंडा, पण्डित विकास जैन, दलपतपुर, **19. गंगेरू** : पण्डित विवेक जैन, बांसवाड़ा, **20. सहारनपुर** : पण्डित गुलाबचन्दजी जैन, बीना, **21. एतमादपुर** : पण्डित बांकेबिहारीजी, **22. एटा** : पण्डित प्रकाशचन्दजी ज्योतिर्विद, मैनपुरी, **23. रुडकी** : पण्डित निशांत शास्त्री, बांसवाड़ा, **24. रानीपुर (झांसी)** : पण्डित महेन्द्र शास्त्री, भिण्ड, **25. कानपुर (मुमुक्षु मण्डल)** : पण्डित विपिनजी जैन, मंगलायतन, **26. खतौली (पद्मप्रभ)** : पण्डित शशांकजी शास्त्री, सागर, **27. छपरौली** : पण्डित अभिनयजी, कोटा, **28. सकीट** : पण्डित ऋषभ जैन, बांसवाड़ा, **29. चिलकाना** : पण्डित पारस अग्रवाल, बांसवाड़ा, **30. कानपुर (छात्र)** : पण्डित संचित शास्त्री, ग्वालियर, **31. सहारनपुर (छात्र)** : पण्डित मनीष शास्त्री, भिण्ड, **32-33. अलीगढ़ (मंगलायतन)** : पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, बिजौलिया एवं आशीष शास्त्री, दूणी, **34-35. आगरा** : पण्डित गणतंत्र शास्त्री एवं निलय शास्त्री, टीकमगढ़, **36-37-38. खतौली** : पण्डित कल्पेन्द्रजी, पण्डित रमेशचन्दजी, पण्डित अशोकजी, **39. बडोत** : ब्र. विनोदजी, कांधला, **40. गुरसराय** : पण्डित दीपकजी शास्त्री, बांरा, **41. मडावरा** : ब्र. सतेन्द्रजी मौ, **42. कुरावली** : पण्डित विशालजी शास्त्री, जयपुर, **43. लखनऊ** : डॉ. ऋषभजी शास्त्री, ललितपुर, **44. झांसी** : पण्डित शुभमजी शास्त्री, झालरापाटन,

45. मंगलायतन विश्वविद्यालय : डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी गुढ़ाचन्द्रजी, **46. सहारनपुर** : पण्डित आशीषजी शास्त्री, जयपुर।

गुजरात प्रान्त

1. अहमदाबाद (वस्त्रापुर) : पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, जबलपुर, **2. अहमदाबाद (नवरंगपुरा)** : पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी, आगरा, **3. अहमदाबाद (मणीनगर)** : पण्डित ज्ञाता झांझरी, सूरत, **4. अहमदाबाद (पालडी)** : पण्डित अभिषेक शास्त्री, सिलवानी, **5. अहमदाबाद (ओढव)** : पण्डित दीपकजी कोटडिया, **6. अहमदाबाद (मेघाणीनगर)** : पण्डित रीतेश शास्त्री, डडूका, **7. अहमदाबाद (आशीषनगर)** : पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री, कोटा, **8. हिम्मतनगर** : पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, खैरागढ़, **9. राजकोट** : पण्डित नीलेशभाई, मुम्बई, **10. दाहोद** : पण्डित रमेशजी 'मंगल', सागर, **11. रखियाल** : पण्डित निखिल जैन, भायंदर, **12. बड़ौदा** : ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री, देवलाली, **12. तलोद** : पण्डित राहुल शास्त्री, मुम्बई, **13. मोरबी** : पण्डित समकित शास्त्री, गुना, **14. अहमदाबाद (अमराईवाडी)** : पण्डित स्वानुभव शास्त्री, गुना, **16. अहमदाबाद (पार्श्वनाथ चैत्यालय)** : पण्डित संजय शाह शास्त्री, परतापुर, **17. अहमदाबाद नरौडा** : पण्डित सुदीपजी शास्त्री, अमरमऊ, **18. जहेर** : पण्डित आशीषजी शास्त्री, मडावरा, **19. नवसारी** : पण्डित अच्युतकान्तजी शास्त्री, जयपुर, **20. सुरेन्द्रनगर** : पण्डित सुधीरजी शास्त्री, मंगलायतन, **21. अहमदाबाद (चैतन्यधाम)** : पण्डित सचिनजी शास्त्री, गढ़ी, **22. अहमदाबाद (चैतन्यधाम)** : पण्डित जयेशजी शास्त्री, जयपुर, **23. अहमदाबाद (चैतन्यधाम)** : पण्डित चेतनजी शास्त्री, गोरमी, **24-25. अहमदाबाद** : पण्डित सोनूजी शास्त्री, पोरसा, पण्डित रीतेशजी शास्त्री, आशीषनगर, **26. जेतपुर** : पण्डित अनेकांतजी शास्त्री, जयपुर, **27-28. दाहोद** : पण्डित राकेशजी दोशी, परतापुर एवं पण्डित वीरेन्द्रजी शाह, डडूका, **29-30-31. सोनगढ़ (विद्यालय)** : पण्डित मेहुलजी शास्त्री, कोलकात्ता, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, बांसवाड़ा एवं पण्डित आत्मन्जी शास्त्री, **32. वापी** : पण्डित आशीषजी शास्त्री, टीकमगढ़, **33. अहमदाबाद (बहिरामपुर)** : पण्डित गौरवजी शास्त्री, बावली, **34. अहमदाबाद (गोमतीपुर)** : पण्डित उदयमणिजी शास्त्री, भिण्ड, **35. अहमदाबाद (महावीरनगर)** : पण्डित नवीनजी शास्त्री, नरोडा, **36. अहमदाबाद (वस्त्रापुर)** : पण्डित मनीषजी शास्त्री, जयपुर, **37. अहमदाबाद** : पण्डित रत्नेशजी शास्त्री, **38. वापी** : पण्डित अनुराग शास्त्री, भगवा, **39. बडोदा** : पण्डित सौरभजी शास्त्री, कर्रापुर।

अन्य प्रान्त

1. कोलकाता : पण्डित रजनीभाई दोशी, हिम्मतनगर, **2. बेलगाँव** : ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना, **3. बैंगलौर** : डॉ. विवेक जैन, सिवनी, **4. रानीपुर (हरिद्वार)** : पण्डित कैलाशचन्दजी शास्त्री, बीकानेर, **5. लुधियाना** : पण्डित अंचल शास्त्री, ललितपुर, **6. हैदराबाद** : पण्डित सुमितजी शास्त्री, छिन्दवाड़ा, **7. एरनाकुलम (केरल)** : पण्डित तपिश शास्त्री, उदयपुर, **8. यमुनानगर (हरियाणा)** : पण्डित सौरभजी शास्त्री, खडेरी, **9. बागेवाड़ी (नगर)** : पण्डित अमित शास्त्री, धर्मन्नावर, **10. देहरादून (विकासनगर)** : पण्डित सचिनजी शास्त्री, जयपुर, **11. गुड़गांव (फेस द्वितीय)** : पण्डित मनोजकुमारजी, मुजफ्फरनगर, **12. सम्मेदशिखर (कुन्दकुन्दनगर)** : पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री, जयपुर, **13-14. खडगपुर** : पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित श्री सौरभजी शास्त्री, जयपुर, **15. कोथली** : पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील, माणकापुर, **16. माणकापुर** : पण्डित चेतनजी चौगुले, **17. स्तवनिधि** : पण्डित आलाप्पन्ना हादीमणी, **18. उगार** : पण्डित राजूजी सांगावे, **19. गुडगांव (से.-43)** : पण्डित शुभम्जी शास्त्री, बिनौली, **20. कोलकात्ता** : पण्डित अमितकुमारजी शास्त्री, फुटेरा, **21. नाहन (हि.प्र.)** : पण्डित प्रियम शास्त्री, जयपुर, **22. सम्मेदशिखर (विधान)** : पण्डित रमेशजी गायक, इन्दौर, **23. डिब्रूगढ़ (आभाम)** : पण्डित करणजी शाह, जयपुर, **24. चम्पापुर (बिहार)** : पण्डित जागेशजी शास्त्री, जबेरा, **25. खैरागढ़ (छ.ग.)** : पण्डित प्रेमचन्दजी, **26. गुडगाँव (फरुकनगर)** : पण्डित आशीषजी शास्त्री भगवा।

दिल्ली प्रान्त

1. दिल्ली (विश्वासनगर) : पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली, **2. दिल्ली (आत्म साधना केन्द्र)** : पण्डित प्रदीपजी झांझरी, उज्जैन, **3. दिल्ली (राजगढ़ कालोनी)** : पण्डित श्रेयांस शास्त्री, दिल्ली, **4. दिल्ली (आत्म साधना केन्द्र)** : पण्डित मधुकरजी, जलगांव, **5. दिल्ली (कैलाशनगर)** : पण्डित पूरणचन्दजी, सोनागिर, **6. दिल्ली** : पण्डित अभिनव मोदी, मैनपुरी, **7. दिल्ली (लारेन्स रोड)** : पण्डित स्वतंत्रभूषण शास्त्री, **8. दिल्ली (इन्द्रपुरी)** : पण्डित मधुबन जैन, मुजफ्फरनगर, **9. दिल्ली (उत्तमनगर)** : पण्डित अभिषेक जैन, पालम, **10. दिल्ली** : विदुषी ईर्या शास्त्री, जयपुर, **11. दिल्ली (विकासपुरी)** : पण्डित सचिन शास्त्री, सागर, **12. दिल्ली (नजफगढ़)** : पण्डित पंकज शास्त्री, बमनी, **13. दिल्ली (सूरजकुण्ड)** : पण्डित विवेक शास्त्री, अमरमऊ, **14. दिल्ली (बहादुरपुर)** : पण्डित संजय राऊत शास्त्री, औरंगाबाद, **15. दिल्ली (पार्श्वबिहार)** : पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री, उस्मानपुर, **16. दिल्ली (शिवाजी पार्क)** : विदुषी राजकुमारीजी जैन, सनावद, **17. दिल्ली (शंकर रोड)** : पण्डित सन्दीपजी शास्त्री, आंजना, **18. दिल्ली** : पण्डित संजीवजी शास्त्री, बारा, **19. दिल्ली** : पण्डित दीपेशजी शास्त्री, गुढ़ा, **20. दिल्ली** : पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, शाहगढ़, **21. दिल्ली** : पण्डित प्रयंक शास्त्री, रहली, **22. दिल्ली** : पण्डित सुमित शास्त्री, टीकमगढ़, **23. दिल्ली (द्वारका से.-11)** : पण्डित राकेशजी शास्त्री, लोनी, **24. दिल्ली (मॉडल बस्ती)** : पण्डित श्रुति शास्त्री, जयपुर, **25. दिल्ली** : पण्डित विवेक शास्त्री, **26. दिल्ली (विश्वासनगर)** : पण्डित विवेक शास्त्री, सागर, **27. दिल्ली** : पण्डित संजय शास्त्री, आंजनावाला, **28. दिल्ली (जनकपुरी)** : पण्डित राहुल जैन शास्त्री, **29. दिल्ली (कालकाजी)** : पण्डित संजीवजी, उस्मानपुर, **30. दिल्ली (खेकड़ा)** : विदुषी प्रमिलाजी, इन्दौर, **31. दिल्ली (छतरपुर)** : डॉ. सुदीपजी शास्त्री, **32. दिल्ली (धरमपुरा)** : पण्डित शुभम् शास्त्री, बांसवाड़ा, **33. दिल्ली (पांडवनगर)** : पण्डित अविनाशजी शास्त्री, बांसवाड़ा, **34. दिल्ली (सरस्वती विहार)** : पण्डित संदीपजी शास्त्री, छतरपुर, **35. दिल्ली (दिल्ली केन्ट)** : पण्डित विवेकजी शास्त्री, बारां, **36. दिल्ली (रोहिणी से.-13)** : पण्डित अनुरागजी शास्त्री, बांसवाड़ा, **37. दिल्ली (पहाड़गंज)** : पण्डित शौर्यजी शास्त्री, मंडाना, **38. दिल्ली (वेदवाड़ा)** : पण्डित चिन्मयजी शास्त्री, कोटा, **39. दिल्ली (बदरपुर)** : पण्डित नवीनजी शास्त्री, कोटा, **40. दिल्ली (पालमगांव)** : पण्डित नीलेशजी शास्त्री, कोटा, **41. दिल्ली (शिवाजी पार्क)** : पण्डित पीयूषजी शास्त्री, बांसवाड़ा, **42. दिल्ली (पीरागढ़ी)** : पण्डित अंकुरजी शास्त्री, कोटा, **43. दिल्ली (इन्द्रापुरम्)** : पण्डित प्रासुकजी शास्त्री, कोटा, **44. दिल्ली (राजा बाजार)** : पण्डित दीपांशुजी शास्त्री, पिड़ावा, **45. दिल्ली (बिनौली)** : पण्डित विपिनजी शास्त्री, बांसवाड़ा, **46. दिल्ली (बहादुरगढ़)** : पण्डित दीपकजी शास्त्री, सेमारी, **47. दिल्ली (खेकड़ा)** : पण्डित रीतेशजी शास्त्री, **48. दिल्ली (कैलाशनगर)** : पण्डित अनुभवप्रकाशजी, ग्वालियर, **49. दिल्ली** : पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, कोटा, **50. दिल्ली** : पण्डित सुदीपजी शास्त्री, जबेरा, **51. दिल्ली** : पण्डित योगेशजी शास्त्री, बांसवाड़ा, **52. दिल्ली** : पण्डित पंकजजी शास्त्री, बंडा, **53. दिल्ली** : पण्डित सौरभजी शास्त्री, शाहगढ़, **54. दिल्ली (दिलशाद गार्डन)** : पण्डित अशोकजी, उज्जैन।

सिद्धभक्ति

5

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

मैं एक सत्य घटना की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। बात उस समय की है कि जब देवलाली में समवशरण मंदिर बन रहा था। उसमें दीवाल में चारों ओर चौबीस तीर्थंकरों की मूर्तियाँ विराजमान हो रही थीं, समवशरण के साथ चौबीसी भी बन रही थी। सभी मूर्तियाँ बुक हो चुकी थीं। इसी बीच एक भाई मेरे पास आये और कहने लगे कि आपके होते हुए ऐसा अन्याय तो नहीं होना चाहिए।

मैंने कहा - भाई ! ऐसा क्या अन्याय हो गया है, जो आप आपे के बाहर हो रहे हैं ?

वे कहने लगे कि मैंने इन लोगों से कहा कि मुझे शान्तिनाथ भगवान दे दो; पर ये सुनते ही नहीं; अच्छे-अच्छे तो इन लोगों ने आपस में बांट लिये हैं, अब मुझे पुष्पदन्त टिका रहे हैं।

मैंने कहा - तीर्थंकर तो सभी समान हैं और जिन्हें हम वर्तमान कहते हैं, वर्तमान चौबीसी मानते हैं; वे सभी तो अभी सिद्धशिला में विराजमान हैं। सिद्ध अवस्था में हैं। वहाँ तो कोई अन्तर होता ही नहीं। आप ऐसा कह कर कि हमें पुष्पदंत टिका रहे हैं, पुष्पदंत भगवान का अपमान क्यों कर रहे हो ?

जब मैंने व्यवस्थापकों से उनकी सिफारिश की तो वे बोले कि हम क्या करें - शान्तिनाथ पहले से ही अमुक व्यक्ति ने ले लिए; अब तो पुष्पदन्त ही बचे हैं, उन्हें कोई लेना ही नहीं चाहता।

यहाँ भी स्थिति वैसी ही थी। पुष्पदन्त दोनों की दृष्टि में बिचारे हो गये थे; क्योंकि उनका कोई चारा (ठिकाना) ही नहीं था। जो चक्रवर्ती थे या बालयति थे या फिर कुछ चमत्कारी थे; वे सब तो चले गये थे, अब तो...।

प्रथम श्रुतस्कन्ध के जन्मदाता आचार्य धरसेन ने यह कभी सोचा भी नहीं होगा कि जैन शास्त्रों को सबसे पहले लिखनेवाले जिस योग्यतम शिष्य का नाम भगवान पुष्पदंत के नाम पर मैंने पुष्पदंत रखा है; एक दिन उन पुष्पदंत भगवान को कोई भी नहीं लेना चाहेगा।

मुझे यहाँ अरहंतों का पुजारी तो कोई दिखता ही नहीं, तीर्थंकरों के ग्राहक भी कम ही हैं; सभी को चक्रवर्ती, कामदेव, बालयति ही चाहिए।

भाई ! तीर्थंकर तो चौबीसों ही हैं, पुष्पदन्त भी तीर्थंकर हैं, वे न तो चक्रवर्ती थे, न कामदेव थे। इसलिए वे पसंद नहीं किये गये। अब सोचो कि हम तीर्थंकर अरहंतों के पुजारी नहीं, पैसेवाले चक्रवर्ती और रूपवान कामदेवों के पुजारी हुए।

आजकल बालयति खूब चल रहे हैं। इन्हें कौन चला रहा है ? इन बाल ब्रह्मचारियों को गृहस्थ लोग तो चलायेंगे नहीं; बालब्रह्मचारी लोग ही चला रहे होंगे; क्योंकि वे भी तो बालब्रह्मचारी हैं।

शायद उन्हें पता नहीं कि **बाल** शब्द का क्या अर्थ होता है। बाल माने बालक। बालक प्राय: नासमझ ही होते हैं; इसकारण बाल शब्द का प्रयोग नासमझों के अर्थ में ही होता रहा है। जैसे बाल मरण, बालबुद्धि, बालचेष्टा आदि।

यदि वे **बाल** नहीं, समझदार हैं तो मैं कहना चाहता हूँ कि पंचपरमेष्ठी अवस्था में तो सभी तीर्थंकर ब्रह्मचारी ही थे। **अरे, भाई! हम तो पंच-परमेष्ठी के पुजारी हैं; उसके पहले कौन/कैसा था; उससे हमें क्या प्रयोजन ?**

जो भी हो, पर यह भी तो ऐसा ही हुआ कि परिवारवालों को परिवारवाद पसन्द आया, पैसेवालों को चक्रवर्ती और सुन्दरता पर रीझनेवालों को कामदेव जँचे तो इसी न्याय से बालब्रह्मचारियों को यदि बालब्रह्मचारी तीर्थंकर जँचें तो इसमें क्या आश्चर्य है ?

अरे, भाई ! लौकिकजन तो लौकिकजन ही हैं; उनकी क्या होड़ करना। अपन तो पढ़े-लिखे लोग हैं, स्वाध्यायी हैं, अभ्यासी हैं; अपन को तो ऐसी बातों पर गंभीर होना चाहिए, गंभीरता से सोचना चाहिए।

हमें एक पौर सा चढ़ता है और जब एक जगह बाहुबली तो फिर गाँव-गाँव में बाहुबली हो जाते हैं; जब तीन चक्रवर्ती तीर्थंकरों का युग आया तो सभी जगह वही हो गये। सीमन्धर का युग आया तो गाँव-गाँव में सीमन्धर हो गये। इसीप्रकार जब पंचबालयति तीर्थंकरों की धुन चढ़ी तो गाँव-गाँव में पंचबालयति की प्रतिष्ठा होने लगी।

हम अपने चित्त की स्थिति पर एक बार गंभीरता से विचार तो करें कि एक ओर हम ९६ हजार पत्नियों के पति को महिमा मण्डित कर रहे हैं; **वहीं दूसरी ओर एक भी शादी नहीं करनेवाले बालब्रह्मचारियों के गीत गा रहे हैं। इसमें हमें कुछ विरोधाभास सा नहीं लगता ?**

अरे, भाई ! दोनों वीतरागी-सर्वज्ञ परमात्मा हैं - यह क्यों नहीं सोचते ? दोनों में भेद डालकर हम क्या करना चाहते हैं ?

आखिर, यह सब क्या है, क्या हम सब लोग भी वैसे ही **गतानुगतिको लोक:** जैसे लोग हैं, भेड़चाल से चलनेवाले लोग हैं।

यदि हम विद्वान लोग भी ऐसी लौकिक धाराओं में ही बहेंगे तो फिर समाज का क्या होगा - यह गंभीरता से विचारने की बात है।

इसके बाद पूरी जयमाला त्रोटक छन्द में लिखी गई है; जिसका आरंभिक छन्द इसप्रकार हैं -

(त्रोटक छन्द)

दुखकारन द्वेष विडारन हो, वशडारन राग निवारन हो।
भवितारन पूरणकारण हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो।।२।।

हे सिद्ध भगवान ! आप दु:ख के कारणरूप द्वेष का नाश करनेवाले हो और सभी जीवों को अपने वश में डालनेवाले इस राग का निवारण करनेवाले हो।

हे भगवन ! यह द्वेष न केवल दु:ख का कारण है, अपितु स्वयं दु:खस्वरूप भी है। आचार्य कुन्दकुन्द ने समयसार में इन मोह-राग-द्वेषरूप आस्रव भावों को अध्रुव, अनित्य, अशरण, दु:खस्वरूप और दु:ख का कारण कहा है।[१]

यद्यपि मोह-राग-द्वेष - सभी आस्रवभाव दु:ख के कारण हैं; तथापि यहाँ द्वेष को दु:ख का कारण और राग को वश में डालने अर्थात् बंधन में डालनेवाला, परवश करनेवाला कहा है।

जो डाकू जेल की पाँच फुट मोटी दीवाल को तोड़कर भाग जाता है, वह डाकू अपने घर में सो रहा हो और बाहर से कोई सांकल लगा जावे तो घंटों घर में कैद रहता है। जबतक कोई सांकल न खोले; तब तक वह चाह कर भी बाहर नहीं आ पाता। वह उन प्लाई के बने किबाड़ों को भी नहीं तोड़ पाता; क्योंकि उसे उन **किवाड़ों से राग है।**

जिसे पुलिस भी नहीं पकड़ पाती; वह माँ-बाप, पत्नी और बच्चों के राग से जकड़ा रहता है, कहीं जा नहीं पाता, चला जाये तो लौट-लौटकर आता है।

जिसप्रकार विषय-कषाय का अशुभराग बंधन में डालनेवाला है; उसीप्रकार माँ-बाप और बाल-बच्चों का शुभराग भी तो बंधन में डालनेवाला है। माँ-बाप और छोटे-छोटे बाल बच्चों के प्रति राग को शुभराग ही कहते हैं। बड़ी मेहनत से बनाई हुई धार्मिक संस्थाओं के प्रति होनेवाला शुभराग भी हमें बाँधता है, इन्हें छोड़कर जाने को मन नहीं करता।

इसलिए बुद्धिपूर्वक द्वेष को दु:ख का कारण और राग को वश में रखनेवाला कहा गया है और हे भगवन् ! **आपको वशडारन राग का निवारण करनेवाला और दु:ख के कारणरूप द्वेष का विदारन करनेवाला कहा गया है।**

आगे की पंक्ति में कहा गया है कि हे भगवन् ! आप भव्य जीवों के कल्याण करने के लिए परिपूर्ण कारण हो, पर्याप्त कारण हो। ऐसे स्व-पर सभी को सुख के कारण हे सभी सिद्धभगवान ! आपको नमस्कार हो, बारम्बार नमस्कार हो।

तात्पर्य यह है कि सभी सिद्ध भगवान मोह-राग-द्वेष से रहित हैं, भव्यों का कल्याण करनेवाले हैं और स्व-पर को सुख प्राप्ति के मूल कारण हैं।

तीसरा छन्द इसप्रकार है -

(त्रोटक छन्द)

समयामृत पूरित देव सही, पर आकृत मूरति लेश नहीं।
विपरीत विभाव निवारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो ।।३।।

समय शब्द के अनेक अर्थ होते हैं - काल का सबसे छोटा भाग, टाइम, देश, युद्ध, छहों द्रव्य, जीवद्रव्य, शुद्धात्मा आदि।

यहाँ इस छन्द में समय का अर्थ शुद्धात्मा ही लेना चाहिए।

हे भगवन् ! आप शुद्धात्मारूपी अमृत से भरपूर हो; आपमें पर की आकृति और मूर्तिकपना रंचमात्र भी नहीं है। आत्मस्वभाव के विपरीत भावों और पर के लक्ष्य से होनेवाले विभावभावों का आप निवारण करनेवाले हो। अतीन्द्रियसुख के कारणरूप हे सिद्ध भगवान ! आपको नमस्कार हो, बारम्बार नमस्कार हो।

भगवान आत्मा और सिद्ध भगवान तो सदा अमूर्तिक ही हैं। अरहंत भगवान को मूर्तिक शरीर में विद्यमान रहने के कारण व्यवहारनय से कदाचित् मूर्तिक भी कह सकते हैं; किन्तु निश्चय से तो वे भी अमूर्तिक ही हैं।

मूर्तियाँ तो मूर्तिक पदार्थों से बनती हैं, पर उनसे आत्मा या अरहंत सिद्ध भगवान मूर्तिक नहीं हो जाते।

चौथा छन्द इसप्रकार है -

(त्रोटक छन्द)

अखिना अभिना अछिना सुपरा, अभिदा अखिदा अविनाशवरा।
यमजाम जरा दुखजारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारन हो।।४।।

हे सभी सिद्धभगवान ! आप खिन्नता से रहित हो, भिन्नता से रहित हो और क्षीणता से भी रहित हो; आप तो जगत में सर्वश्रेष्ठ हो।

अधिक क्या कहे आप भेद से रहित हैं, खेद से रहित हैं और आपने अविनाशी पद का वरण किया है। ऐसा भी कह सकते हैं कि आपने अपने अविनाशी स्वभाव का आश्रय लेकर अविनाशी मोक्षपद की प्राप्ति की है।

जगत के लोग तो सदा ही विनाशीक वस्तुओं का वरण करते हैं और फिर उनके वियोग हो जाने पर खेदखिन्न होते रहते हैं; किन्तु आपने अविनाशी स्वभाव का वरण कर अविनाशी पद प्राप्त किया है।

देखो, यहाँ सिद्ध भगवान को **अविनाशवरा** कहा जा रहा है। यह कितना अच्छा प्रयोग है। इसका भाव यह है कि सारा जगत तो क्षणभंगुर पदार्थों के पीछे भाग रहा है; पर आपने अनादि-अनन्त अविनाशी भगवान आत्मा का वरण किया है। यही कारण है कि आपको अविनाशी सिद्धपद की प्राप्ति हुई है। **जिसको भी अविनाशी पद की प्राप्ति करनी हो, वह क्षणभंगुर पर्यायों के पीछे दौड़ना छोड़कर एकमात्र अपने अविनाशी आत्मा में अपनापन स्थापित करे, उसे ही निजरूप जाने-माने और उसी में जम जाय, रम जाय।**

यदि ऐसा किया गया तो वह भी आपके समान अविनाशी सिद्ध पद की प्राप्ति कर लेगा।

अधिक क्या कहें, आप तो जन्म, जरा और मृत्यु के दु:खों को जला देनेवाले हो। हे सुख के कारणरूप सभी सिद्ध भगवान ! आपको नमस्कार हो, बारम्बार नमस्कार हो। **(क्रमशः)**

2 सितम्बर 2013, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

पीएच.डी. की उपाधि

जैनपथप्रदर्शक के यशस्वी सह-सम्पादक **पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** को जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा **'जैनदृष्टि में तीन लोक : एक समीक्षात्मक अध्ययन'** विषय पर शोधकार्य हेतु पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। आपने अपना यह शोध कार्य डॉ. (प्रो.) बीनाजी अग्रवाल के निर्देशन में पूर्ण किया।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध सात अध्यायों में विभक्त है, जिसमें तीन लोक : सामान्य स्वरूप के अतिरिक्त अधोलोक, मध्यलोक में जम्बूद्वीप, अन्य प्रमुख द्वीप समुद्र, षट्काल विवेचन, ज्योतिषलोक एवं ऊर्ध्वलोक सम्बन्धी महत्वपूर्ण विषयों का समावेश किया गया है।

इसशोधपूर्ण कृति को शीघ्र पुस्तकाकार प्रकाशित करने की योजना है। टो.दि.जैन सि.महाविद्यालय परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई।

आगामी कार्यक्रम...

अ. भा. दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् एवं टोडरमल स्नातक परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में **पण्डित टोडरमल और उनका मोक्षमार्गप्रकाशक** विषय पर **दिनांक 12 से 14 अक्टूबर तक त्रिदिवसीय संगोष्ठी** 16वें शिक्षण शिविर के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित होने जा रहा है। इसमें डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर, डॉ. अशोकजी जैन दिल्ली, डॉ. राजीव प्रचंडिया अलीगढ, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई इत्यादि अनेक विद्वानों को आमंत्रित किया गया है।

आप सभी गोष्ठी का लाभ लेने हेतु शिविर में सादर आमंत्रित हैं।

हार्दिक बधाई

सुश्री शिवानी जैन सुपुत्री श्री सुनील-भावना जैन सुपौत्री श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा की 19वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में 250-250/- रुपये जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु प्राप्त हुये।

शोक समाचार

इन्दौर (म.प्र.) निवासी श्री राजेन्द्रजी पहाड़िया का दिनांक 17 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं इन्दौर मुमुक्षु मण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता थे। जयपुर शिविर में भी आप लाभ लिया करते थे एवं टोडरमल स्मारक द्वारा संचालित गतिविधियों के अनन्य सहयोगी थे।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-

वेबसाईट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

महाविद्यालय का सुयश

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की छात्रा कु. श्रुति जैन सुपुत्री श्री राकेशजी जैन दिल्ली ने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा 2012 में 84.05 प्रतिशत अंक प्राप्त कर मेरिट में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि हेतु संस्कृतदिवसान्तर्गत-राज्यस्तरीय-संस्कृतदिवस समारोह में दिनांक 19 अगस्त को श्री बृजकिशोरजी शर्मा (शिक्षामंत्री-राजस्थान) द्वारा स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

हार्दिक आमंत्रण

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में
पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित १६ वाँ

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार 6 अक्टूबर से मंगलवार 15 अक्टूबर 2013 तक)

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

नोट : कृपया आवासादि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें।

प्रकाशन तिथि : 28 अगस्त 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127